

---

# Bharatam Jayatachchiram

भारतं जयताच्चिरम्

## Document Information

---

Text title : Bharatam Jayatachchiram

File name : bhArataMjayatAchchiram.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : vijayan vi. paTTAmbI

Acknowledge-Permission: Vijayan V. Pattambi

Latest update : August 11, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 12, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

भारतं जयताञ्छिरम्



सर्वदेशेषु सम्भुद्धं  
सर्वलोकेषु विश्रुतम् ।  
सर्वलोकसमाराध्यं  
भारतं जयताञ्छिरम् ॥ १ ॥

स्वरुचिं साधु संवर्धय  
साधुभावं प्रकाश्य य ।  
स्वान्तं शान्तिसंयुक्तं  
भारतं जयताञ्छिरम् ॥ २ ॥

स्वायत्तं वर्धितं वीर्यं  
स्वायत्तं जनमाण्डलम् ।  
स्वरभेदं विना यैत-  
द्भारतं जयताञ्छिरम् ॥ ३ ॥

योगविदां प्रसार्यात्र  
सर्वलोकेषु य पुनः ।  
सर्वशित्तानि संयम्य  
भारतं जयताञ्छिरम् ॥ ४ ॥

स्वायत्तीकृत्य तन्त्राणि  
संलक्ष्य शत्रुविह्वलान् ।  
संसेव्य रणतन्त्राणि  
भारतं जयताञ्छिरम् ॥ ५ ॥

संलक्ष्य साधु व्याधिघ्ना-  
नौषधानपि सत्वरम् ।  
निहत्य व्याधिजालं त-  
द्भारतं जयताञ्छिरम् ॥ ६ ॥

संसेव्य संस्कृतं नित्यं  
सर्वलोकोपकारकम् ।  
सर्वान् ज्ञानेन सत्कृत्य  
भारतं जयताञ्छिरम् ॥ ७ ॥

स्वाधीनस्य सुभग्यान्ध-  
दन्यैषा यात्मनिर्वृतिः ।  
स्वाधीनं सर्वतोभद्रं  
भारतं जयताञ्छिरम् ॥ ८ ॥

— विजयन् वि. पट्टाभि

---

*Bharatam Jayatachchiram*

pdf was typeset on August 12, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

